Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

Reg. No MAHHIN / 2008 / 26222

ISSN-2250-2335

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की अर्द्ध वार्षिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

देवेश ठाकुर

जीवन के ९०वें वसंत में प्रवेश करने पर समीचीन परिवार की ओर से अनंत शुभकामनाएँ

● वर्ष-15 ● अंक 31 ● अप्रैल - जून 2022 ● पूर्णांक 69 मूल्य 100 रुपए

● प्रधान संपादक - देवेश ठाकुर ● संपादक - डॉ. सतीश पांडेय

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

ISSN 2250-2335 Reg.No.MAHHIN/2008/28777

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की त्रैमासिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

प्रबंध संपादिका :
डॉ. रोहिणी शिवबालन
प्रधान संपादक-प्रकाशक :
डॉ. देवेश ठाकुर
संपादक :
डॉ. सतीश पांडेय
संयुक्त संपादक :
डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट
डिजिटल संपादक :
डॉ. मनीष कुमार मिश्रा

संपादकीय-संपर्क :
बी-23, हिमालय सोसाइटी,
असल्फा,
घाटकोपर (प.), मुंबई-400 084.
टेलिफोन : 25161446
Email: sameecheen@gmail.com
website-www.http//:
sameecheen.com

विशेष :
'समीचीन' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबद्ध रचनाकारों के हैं। संपादक-प्रकाशक की उनसे सहमति आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय-क्षेत्र मात्र मुंबई होगा। सभी पदाधिकारी पूर्णरूप से अवैतनिक।

परीक्षक विद्वत मंडल : (Peer Review Team)
1) प्रोफेसर ताकेशी फुजिई
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
टोक्यो यूनिवर्सिटी फॉर फॉरेन स्टडीज, टोक्यो
2) प्रो. (डॉ.) देवेन्द्र चौबे
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
3) प्रो. (डॉ.) वशिष्ठ अनूप
हिन्दी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय,
वाराणसी (उ. प्र.)
4) डॉ. नरेन्द्र मिश्र
प्रो. हिंदी, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू मैदानगढ़ी,
दिल्ली110068
5) प्रो. (डॉ.) करुणाशंकर उपाध्याय
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई
6) डॉ. अनिल सिंह
अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययन मंडल, मुंबई
विश्वविद्यालय, मुंबई
7) प्रो. (डॉ.) सदानंद भोसले
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे
8) प्रो. (डॉ.) सुरेशचंद्र चुलकीमठ
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़
9) डॉ. अरुणा दुबलिश
पूर्व प्राचार्य, कनोहरलाल महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, मेरठ (उ. प्र.)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक : देवेश ठाकुर ने प्रिंटोग्राफी सिस्टम (इंडिया) प्रा. लि., 13/डी, कुर्ला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नारी सेवा सदन रोड, नारायण नगर, घाटकोपर (प.) मुंबई-400 086 में छपवाकर बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा, घाटकोपर (प.), मुंबई-400084 से प्रकाशित किया।

• वर्ष-15 • अंक 31 • अप्रैल-जून-2022 • पूर्णांक 69 • मूल्य 100 रुपए
सहयोग : एक प्रति रु. 100/-, वार्षिक रु. 400/-, पंच वार्षिक रु. 2000/-
सीधे समीचीन के खाते में भेजने के लिए : खाताधारक का नाम : **समीचीन** / sameecheen
A/C No. 60330431138, Bank of Maharashtra,
Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai. IFSC : MAHB0000045

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

अनुक्रमणिका

अपने तईं

1. जंगल के जुगनू : नारी-संकल्प एवं संघर्ष का आख्यान
- डॉ. प्रविणचंद्र बिष्ट 05-10
2. गोडसे@गांधी.कॉम : संवादहीनता बनाम संवाद
- डॉ. सदानंद भोसले, प्रा. प्रदीप रंगराव जटाल 11-15
3. आदिवासी अस्मिता का पक्षधर कवि-अनुज लुगुन
- डॉ. आरिफ शौकत महात 16-21
4. उनकी खामोशी अब भी बहुत कुछ कह रही है..
-डॉ. महेश दवगे 22-27
5. अज्ञेय का सृजनात्मक चिन्तन-डॉ. राजन तनवर 28-32
6. 'बिखरे पन्ने' का आत्मनिरपेक्ष आत्म- डॉ. मीना गुलवणी 33-38
7. अब्बास किरोस्तामी की सिनेमाई प्रयोगधर्मिता का समीक्षात्मक अध्ययन- डॉ. ईशान त्रिपाठी 39-44
8. अमूर्त में मूर्त की सत्यता: भारत दुर्दशा- डॉ. पूनम शर्मा 45-50
9. गोरखनाथ के काव्य की भाषिक संरचना-डॉ. दिनेश साहू 51-57
10. मीरा : नारी का संघर्ष- डॉ. सीमा रानी 58-63
11. गुप्त जी के काव्य में व्याप्त पर्यावरण संरक्षण-डॉ. मिथिलेश शर्मा 64-70
12. रामानंद रामरस माते, कहहि कबीर हम कहि कहि थाके...
-डॉ. अशोक कुमार मीना 71-75
13. रसानुभूति और महेश दिवाकर का काव्य-डॉ. सुनील कुमार 76-81
14. भविष्य की उम्मीद को टटोलती समकालीन कविता
-डॉ. शशि शर्मा 82-87
15. डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' की 'बस एक ही इच्छा' में चित्रित स्त्री संवेदना-डॉ. पठान रहीम खान 88-93
16. 'नथ्थी टूट गयी थी' कहानी में चित्रित वेश्या जीवन
-डॉ.जाकिर हुसैन गुलगुंदी 94-98
17. इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में ग्लोबल संस्कृति
-डॉ. ललित श्रीमाली 99-103
18. बद्री सिंह भाटिया के कहानी संग्रह 'कवच' में राजनीतिक सन्दर्भ-डॉ. अंजू बाला 104-108
19. 'झूमुर' गीतों में प्रेम-प्रियंका दास 109-114
20. आजादी के बाद मानवीय संवेदना का बिखरता मूल्य एवं स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास-रविकान्त राय 115-119

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

भविष्य की उम्मीद को टटोलती समकालीन कविता

डॉ. शशि शर्मा

बच्चे फूल की तरह कोमल और नाजुक ही नहीं, फूल की तरह सुगंधित भी होते हैं। उनकी सहज मुस्कान, उनकी अपरिपक्व कथनी, उनकी निश्छल करनी, सभी मनभावन होते हैं। बच्चों के बिना परिवार, समाज और देश की परिकल्पना निरर्थक है। बच्चों की उपस्थिति परिवार के लिए सुख का पर्याय है तो देश के लिए उनके कंधे अतीत और भविष्य का भार उठाने की उम्मीद हैं। देश की उन्नति और प्रगति में उनकी निर्णायक भूमिका होती है। इसलिए उनका सही और समग्र विकास परिवार, समाज और देश की सर्वप्रमुख जिम्मेदारी है। विडंबना यह है कि इस जिम्मेदारी का निर्वहन सटीक ढंग से नहीं हो रहा है। बच्चों से जुड़ी कई संस्थाओं यथा यूनिसेफ, क्राई आदि की ताजा रिपोर्ट दर्शाती है कि हमारे जीवन को दिशा और गति देने वाले ये बच्चे चाहे वह अमीर घर से ताल्लुक रखते हों या गरीब घर से - आर्थिक, सामाजिक, मानसिक और शारीरिक शोषण का शिकार हो रहे हैं। प्रत्येक दिन अखबारों में बच्चों से जुड़ी किसी न किसी भयावह खबरों से हम मुखातिब होते हैं। 'बच्चे और हम' पुस्तक की भूमिका में संपादक राजकिशोर ने जो बातें रखी हैं, अवलोकनीय हैं- 'यह हमारी सभ्यता पर एक प्रतिकूल टिप्पणी है कि उसके विकास के साथ-साथ बच्चों की दुनिया मुश्किल होती गयी है।'[1] वास्तव में यह तथाकथित विकास बच्चों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सांस्कृतिक विकास के लिए काफी प्रतिकूल है।

समकालीन कविता भविष्य की उम्मीद अर्थात् बच्चों के प्रति प्रतिबद्ध कविता है। बच्चों की सोच, समस्या, आशा-आकांक्षा, पीड़ा, महत्ता को कई समकालीन कवियों ने शब्द दिया है। बच्चे माता-पिता के बीच का वह सेतु हैं, जिनकी वजह से दाम्पत्य संबंधों में सुदृढ़ता आती है। कवि गिरधर राठी लिखते हैं -'किलकारियाँ /पाट देती दरारें / हम तुम फिर एक हो जाते।'[2] बच्चों की उपस्थिति असीम प्रेम और आनंद से सराबोर कर देती है। उनकी अनुपस्थिति से उत्पन्न बेचैनी को अनामिका के शब्दों में महसूसा जा सकता है- 'घर से बच्चा चला गया है / छूट गई है एक जुराब,/ जागी आँखों में छूटा हो/जैसे एक खिलौना ख्वाब!'[3]

यह तथ्य निर्विवाद है कि बच्चे संपूर्णता का एहसास कराते हैं। तकनीक का तीव्रतर विकास दर्शाता है कि बच्चे सिर्फ संतानहीनता का टैग नहीं हटाते बल्कि माता-पिता के जीवन को एक औचित्य भी देते हैं। कवयित्री अंजना भट्ट के लिए बच्चा उनके 'जिस्म पर उगा हुआ/ इक प्यारा सा नन्हा फूल...'[4] है जिसके साथ वे आत्मा-परमात्मा सी अनुभूति पाती हैं। उनकी सारी चेतना बच्चों के इर्द-गिर्द घूमती है- 'तेरी मुस्कुराहटों से जागता है /मेरी सुबहों का लाल सूरज /तेरी संतुष्टि में ढलता है /मेरी शामों का सुनहरा सूरज।'[5]

आशीष त्रिपाठी महसूसते हैं कि बेटी का 'हाथ पकड़ना' - 'आत्मा के सबसे प्यारे

Principal
Kalipada Ghosh Tarai Mahavidyalaya
PRINCIPAL
Kalipada Ghosh Tarai
Mahavidyalaya
Bagdogra

16. नीलेश रघुवंशी, कवि ने कहा, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 44
17. लीलाधर जगूड़ी, भय भी शक्ति देता है, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 73
18. मनीषा झा, समय, संस्कृति और समकालीन कविता, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, पृ. 187
19. ज्ञानेन्द्रपति, कवि ने कहा, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 21
20. निर्मला पुतुल, नगाड़े की तरह बजते हैं शब्द, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली,पृ. 15
21. रंजना जायसवाल, बच्ची की फरियाद, www.kavitakosh.org/ranjana-jaiswal
22. सविता सिंह, नींद थी और रात थी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली, पृ.101
23. भगवत रावत, कवि ने कहा, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 106
24. मधुरिमा सिंह,धूपकाया, www.kavitakosh.org/madhurimasingh
25. सविता सिंह, पचास कविताएँ, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 27

गौर आवासन,
रविन्द्रपल्ली,
माटीगाड़ा,
जिला-दार्जिलिंग-734010,
पश्चिम बंगाल